अध्याय –1

हमारे वाद्य एवं उनके प्रकार

आदि काल से संगीत में वाद्यों का विशिष्ट स्थान रहा है। अजंता एलोरा और एलिफेन्टा की चित्रकारी व मोहनजोदड़ो के भग्नावशेष तथा वेद, उपनिषद आदि ग्रन्थों में विभिन्न वाद्यों का उल्लेख हुआ है। भगवान शंकर का प्रिय वाद्य डमरू और भगवती सरस्वती का प्रिय वाद्य वीणा मानी गई है। भारतीय वाद्यों को चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है-तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन। यह विभाजन संगीत रत्नाकर पर आधारित है।

तत्, सुषिर, अवनद्ध और घन।
वाद्यतंत्री ततं वाद्यं सुषिरमतम् ।।
चर्मावनद्ध वदनमवद्धं तु वाद्यते।
धनोमूर्तिः सा डमिघाता अघते यत्रं तद्धनम् ।।

संगीत रत्नाकर

(1) जिन वाद्यों में तांत अथवा तार द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, वे तत् वाद्य कहलाते है, जैसे-तानपूरा सितार, सारंगी, वायलिन इत्यादि। वीणा तत् वाद्यों की जननी मानी जाती है, इन वाद्यों को पुनः तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

(अ) वे वाद्य जो अँगुलियों, मिजराब अथवा जवा द्वारा बजाये जाते हैं जैसे-सितार, वीणा, तानपूरा, सरोद इत्यादि।

(ब) जो गज अथवा कमानी द्वारा बजाये जाते हैं जैसे-बेला, सारंगी, दिलरूबा इत्यादि।

(2) जिन वाद्यों में स्वरों की उत्पत्ति वायु द्वारा होती है, वे सुषिर वाद्य कहलाते हैं, जैसे-हारमोनियम, शहनाई, बांसुरी, क्लैरिनट, शंख, तुरही इत्यादि। इन वाद्यों को भी हम दो भागों में बांट सकते है-

(अ) पहला विभाग उन वाद्यों का है जिनमें पतली पत्ती अथवा रीड द्वारा स्वर उत्पन्न होते है, जैसं-हारमोनियम,शहनाई, आदि।

(ब) दूसरा प्रकार उन वाद्यों का है जिनमें छिद्र द्वारा स्वर निकलते हैं जैसे-बांसुरी, विगुल शंख आदि।

(3) भारतीय वाद्यों का तीसरा प्रकार अवनद्ध वाद्यों का है, इन वाद्यों में चमड़े अथवा खाल को आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है, जैसे-तबला, पखावज, ढोलक, डमरू, नगाड़ा, भेरी इत्यादि। इनका प्रयोग ताल देने के लिए होता है, क्योंकि इनमें केवल एक स्वर उत्पन्न होता है, अतः इन वाद्यों में स्वर की अपेक्षा लय की प्रधानता रहती है, ये वाद्य मुख्यतः गायन और वादन की संगति के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

(4) वाद्यों का अन्तिम प्रकार धन वाद्यों का है। इनमें किसी धातु अथवा लकड़ी द्वारा स्वरोत्पत्ति होती है, जैसे-मंजीरा, झांझ, करताल, जलतरंग, काष्ठ तरंग, नल तरंग इत्यादि।

वाद्यों का उपर्युक्त विभाजन आकार उपयोग और उनके बजाने के ढंग पर आधारित है। वाद्य विभाजन की दृष्टि से विद्वानों के मुख्य तीन मत पाये जाते हैं। प्रथम मतानुसार सम्पूर्ण वाद्यों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है-तत्, घन और सुषिर, इनमें अवनद्ध को घन में सम्मिलित कर लिया गया है। दूसरे मतानुसार चार भागों में विभक्त किया गया है। इसके भी दो प्रकार है। पहले प्रकार में समस्त वाद्यों को तत्, घन, अवनद्ध और सुषिर भागों में और दूसरे प्रकार में तत्, वितत घन और सुषिर वर्गों में बाँटा गया। इस विभाजन में अवनद्ध को घन में सम्मिलित कर देते है और वितत को तत से पृथक कर देते हैं। मिजराव अथवा जवा से बजाये जाने वाले वाद्य तत् तथा छड़ी अथवा कमानी से बजाये जाने वाले वाद्य वितत कहलाते हैं। इन दोनों में समता यह है कि दोनों प्रकार के वाद्यों में तार अथवा तांत द्वारा स्वरोत्पत्ति होती है। अन्तिम मतानुसार कुल वाद्यों को पांच भागों में विभाजित किया गया है-तत्, वितत, अवनद्ध, घन और सुषिर।

अधिकांश विद्वानों द्वारा "संगीत-रत्नाकार" का वह विभाजन जिस पर इस पाठ में प्रकाश डाला जा चुका है, मान्य है।

वाद्य वृन्द के कलाकार

संतूर

पं० शिवकुमार शर्मा

यह सितार परिवार का तार-वाद्य यंत्र है और यह संभवतः फारस मूल का है। यह भारत में मुख्यतः कश्मीर में बजाया जाता है। यद्यपि संतूर फारस, अरब तथा भारत में शास्त्रीय संगीत वर्ग में रहा है। लेकिन कश्मीर में यह सूफी संगीत के 100 तारों वाले वाद्ययंत्र के रूप में प्रचलित रहा। लकड़ी से बना संतूर समलंबाकार फ्रेम वाला होता है जिसमें धातु के तार खिंचे होते हैं। ये तार लकड़ी की छोटी डंडियों या कलम से बजाए जाते हैं, खींचे नहीं जाते। बजाते समय संगीतकार संतूर को अपनी गोद में लिटा कर रखता है और इसका चौड़ा भाग उसकी कमर के पास रहता है। ध्वनि पटल पर लकड़ी के ब्रीज या परदे रखे हाते हैं। तारों को बाईं ओर लगी कीलों में बाँधा जाता है और वह ध्वनि पटल पर लगे परदों पर फैलाकर खींच दिए जाते हैं। सुर मिलाने या नियंत्रण करने की खूँटिया दाहिनी ओर होती हैं। कई संतूरों में 29 परदे होते हैं, जो एक-एक अलग सुर से सम्बद्ध होते है। प्रत्येक परदे पर तीन तार टिके रहते हैं।

20वीं सदी की पूवार्द्ध में इसे शास्त्रीय संगीत के रूप में स्वीकार किया गया। संतूर के प्रसिद्ध वादकों में एक पंडित शिवकुमार शर्मा हैं। मधुर ध्वनि वाला संतूर विभिन्न रूपों में एशिया में पाया जाता हैं। इसमें अलग-अलग देशों में तारों की संख्या अलग-अलग होती है। ईरान इराक तथा तुर्की में. सेंटोर नाम से जाना जानेवाला इस वाद्य यंत्र में 72 तार है। चीन में इस वाद्य यंत्र में 45 तार है। यूनान में संतूरी, फिनलैंड में कैंटेलें तथा इंगरी और रोमानिया में सिंबालोन इसी प्रकार के वाद्य यंत्र हैं।

बाँसुरी या मुरली

पं० हरि प्रसाद चौरसिया

भारतीय वाद्य यन्त्रों में बाँसुरी या मुरली प्राचीनतम वाद्य यन्त्र है। यह सुषिर वाद्य के अन्तर्गत आता है। इसे एक से दो फीट लम्बा तथा आधा इंच या पौन इंच मोटाई के खोखले बाँस से बनाया जाता है। वर्तमान समय में यह स्टील, पीतल आदि धातुओं का भी निर्मित होने लगा है। इसे वंशी भी कहा जाता है। प्राचीन शास्त्रों में इसे 'वेणु' की संज्ञा दी गई है। इसके एक छोर पर मुख के पास एक गाँठ या कॉर्क लगा रहता है जिसके समीप एक छिद्र रहता है जिसमे फूँक लगाई जाती है। दूसरी ओर मध्य स्थान से अन्तिम छोर के बीच छह या सात छिद्र होते हैं जिनपर दोनों हाथों की विभिन्न उँगलियों का प्रयोग फूँक के साथ करने पर अलग-अलग स्वर निकलते है। जिस वंशी के फूँक वाले छिद्र को हम होंठ पर दाहिनी ओर आड़ा रखकर बजाते हैं उसे 'आड़ बंसी' या 'मुरली कहा जाता है तथा जिस वंशी को मुँह में सीधा पकड़ कर फूँका जाता है उसे 'बांसुरी' या सरल वंशी कहते हैं।

बाँसुरी या मुरली हमारे शास्त्रीय संगीत तथा विशेषकर लोक संगीत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। आजकल फिल्मी संगीत में भी इसका महत्त्व कम नहीं है। वर्तमान बाँसुरीवादकों में पं० हरिप्रसाद चौरसिया तथा श्री रघुनाथ सेठ का नाम उल्लेखनीय है। बाँसुरी शब्द के साथ ही प्रत्येक भारतीय के हृदय में भगवान कृष्ण की अपूर्व छवि अंकित हो जाती है, जो इस युग के महानतम आध्यात्म एवं संगीत के प्रवर्तक एवं आधार स्तंभ माने जाते हैं।

डॉ० रमारमण बिहारी

बांसुरी में सरगम निकालने की विधि : सर्वप्रथम बांसुरी के सब सुराखों को अपने दाहिने तथा बाएँ हाथ की पहली, दूसरी, तीसरी अंगुलियों से बन्द करें, उन बन्द अंगुलियों से धीरे फूंकने पर जो आवाज निकलेगी वह मन्द्र सप्तक का पंचम होगा फिर क्रमशः नीचे से एक अंगुली को हटाने पर धैवत फिर एक हटाने पर निषाद फिर तीसरा हटाने पर षडज बजेगा। इस प्रकार क्रमशः हटाने पर रे ग तथा म अर्थात रिषभ, गंधार, मध्यम बजेगा। इस प्रकार सभी अंगुलियाँ हट जाने पर मध्यम फिर क्रमशः प ध नि सा फूंक को क्रमशः बढ़ाने पर बजेगा इन स्वरों मे सभी शुद्ध स्वर तथा मध्यम तीव्र स्वर है।

तानपुरा

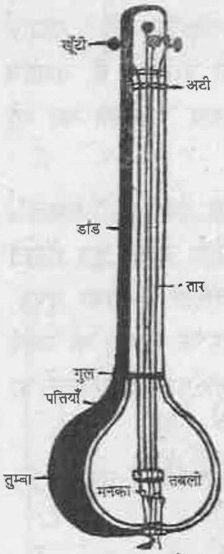

तानपुरा

परिचय : तानपूरा या तम्बूरा भारत का एक प्राचीन वाद्य यन्त्र हैं। यद्यपि तानपूरे के चार तार पर दो स्वरों की ही स्थापना होती है, तथापि तानपूरा के सही रूप में मिल जाने पर उसके तारों को सम्यक रूप में छेड़ने पर गायन-वादन के लिए अत्यन्त सुन्दर वातावरण बन जाता है जो तारों से निकलने वाले सहायक वादों की देन कही जा सकती हैं।

तानपूरा का अंग वर्णन

1. तुम्बा : यह गोल तथा सूखे हुए कद्दू का रहता है जो हांडी के आकार का होता है।

2. तबली : तुम्बे के ऊपर एक पतली लकड़ी का ढक्कन सा होता है जिसपर घुरच स्थापित रहता है, उसे तबली कहते हैं।

3. घुरच : तबली के ऊपर हिरण के सींग या हाथी दाँत अथवा हड्डी का पुल के आकार का टुकड़ा लगा रहता है जिसे घुरच कहते हैं।

4. लंगोट : तानपूरा के तुम्बे के निचले छोर पर चार तारों को बाँधने के लिए एक लकड़ी की पट्टी लगा दी जाती है जिसमें चार छिद्र कर दिए जाते हैं जिसे लंगोट कहते हैं।

5. डाँड : तानपूरा के तुम्बा के ऊपर लकड़ी का एक तुम्बा और खोखला भाग लगा रहता है, उसे **डाँड** कहते हैं।

6. गुल : तुम्बा और डाँड को जोड़ने वाले स्थान को गुल कहते हैं।

7. तार गहन : तानपूरे के सबसे ऊपर भाग में खूँटियों के नीचे हड्डी की दो पट्टियाँ लगी रहती हैं, दूसरे पट्टी का नाम तार गहन हैं।

8. खूँटियाँ : तार गहन के ऊपर तानपूरे के **डाँड** के अन्तिम छोर पर लकड़ी की चार खूँटियाँ लगी होती हैं।

9. सिरा : तानपूरे के डाँड का अन्तिम भाग जहाँ पर चार खूँटियाँ लगी रहती है 'सिरा' कहलाता है।

10. मनका : तानपूरे के घुरच के ब्रिज के नीचे हाथी दाँत या काँच का गोल या पक्षी आकार का लगा वस्तु मनका कहलाता हैं।

11. तार : तानपूरे में चार तार लगे होते हैं, इनमें से बची के दो तार 'जोड़ी' के कहलाते हैं जो स्टील के होते हैं। इन दोनों को मध्य सप्तक के षडज में मिलाया जाता है।

12. सूत : घुरच या ब्रिज पर चढ़े तारों के नीचे सूत या धागा लगाया जाता है जिन्हें खिसकाने से झंकार उत्पन्न होती है। इसे 'घवारी खोलना' कहते हैं।

सरोद

यह रबाब भी कहलाता है। यह वीणा परिवार का उत्तर भारतीय तार वाद्य है, जो लगभग 950 ई० से शास्त्रीय संगीत के वाद्य-वृंद में तथा एकल वाद्य के रूप में तबले एवं तंबूरे के साथ बजाया जाने लगा। इसे उंगली या कमान से बजाया जाता है। सरोद गहरा होता है, जिसका निचला हिस्सा चमड़ा मढ़ा, पर्दाविहीन धातु कई अनुवादी तारों से युक्त होता है। मध्य 'सा' से शुरू करते हुए लय तारों को सा-म-प-सा में सुरबद्ध किया जाता हैं।

सरोद वादक : उस्ताद अमजद अली खाँ अपने पुत्रों के साथ

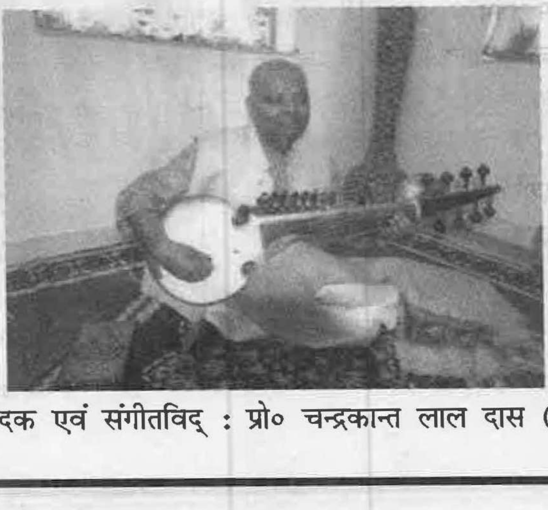

सरोदवादक एवं संगीतविद् : प्रो० चन्द्रकान्त लाल दास (बिहार)

वायलिन या बेला

वायलिन वादिका एन राजन

वर्तमान में वायलिन विश्व के सर्वश्रेष्ठ वाद्य यन्त्रों में एक है। यद्यपि अधिकांश कलाकार इसे विदेशी वाद्ययन्त्र मानते हैं, परन्तु इसका उद्गम स्थान प्राचीन भारतवर्ष ही है।

इसके उद्भव के विषय में अमेरिका के महान संगीतज्ञ एवं अन्वेषक श्री डेविड एच० पटकाऊ ने अपनी पुस्तक (Growth of Instruments and Instrumental Music) में खुले दिल से स्वीकार किया है कि वायलिन के 'गज' या ('बो') (Bow) का आविष्कार प्राचीन काल में भारतवर्ष में ही हुआ। अतः यह स्वयं सिद्ध है कि उसके (बो) पूर्व किसी वाद्य यन्त्र का भी निर्माण अवश्य हो चुका होगा।

हमारे प्राचीन दर्शन तथा संगीत से सम्बन्धित अनेक शास्त्रों से भी पता चलता है कि आज से करीब 8 लाख 70 हजार वर्ष पूर्व त्रेता युग मे लंका पति रावण ने गज से बजाने वाले एक-तार युक्त वाद्य यन्त्र का आविष्कार किया, जिसे 'रावणास्त्रम' कहा जाता था। उसका दूसरा नाम "बाहुलीन" भी था क्योकि इसे बाँह पर रखकर बजाया जाता था। सम्भव है 'बाहुलीन' शब्द ही कालान्तर में रूपान्तरित होकर आज "वायलिन" के नाम से प्रचलित हो।

यह वाद्ययन्त्र कालान्तर में वर्मा, मलाया, इजिप्ट (मिस्र), पर्शिया तथा अन्य अरब देशों से होता हुआ यूरोपीय देशों में पहुँचा। इस क्रम में अरब देश में उसका रूपान्तरण "रबाब" के रूप में हुआ जो आज भी अरब के अतिरिक्त सुदूर उत्तर भारत, जैसे काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि प्रान्तों में प्रचलित है। इसके अतिरिक्त यह वाद्ययन्त्र रूस के काकेसस पहाड़ी की तराई में भी विभिन्न रूपों में परिवर्धित और विकसित होकर प्रचलित हुआ।

यूरोपीय देशों में तो इस पर सर्वाधिक अनुसंधान हुए तथा यह कई रूपों में परिवर्तित होकर "क्राथ", "लीरा", "रेसेक" आदि के नाम से व्यवहार में आया। बाद में 'रेबेक' ही "वायलिन" के रूप में परिवर्तित हुआ तथा अनेकानेक रूप धारण करने के पश्चात् इस वर्तमान स्वरूप में स्थित हुआ। इस दिशा में विगत 500 वर्षों में इटली, जर्मनी तथा चेकोस्लोविया में इस पर सर्वाधिक अनुसंधान एवं सृजन-कार्य हुआ।

वायलिन के अंग

(1) स्क्रॉल (Scroll) : वायलिन के सबसे ऊपरी भाग को स्क्रॉल कहते है। यह घुमावदार होता है। किसी-किसी स्क्रॉल में घुमाव के स्थान पर मानव या अन्य जन्तु की आकृति भी बनी रहती है।

(2) नेक (Neck) : स्क्रॉल की लकड़ी का ही निचला भाग वायलिन के बॉडी तक चला जाता है। जिसके लम्बे भाग को नेक या गर्दन कहते हैं।

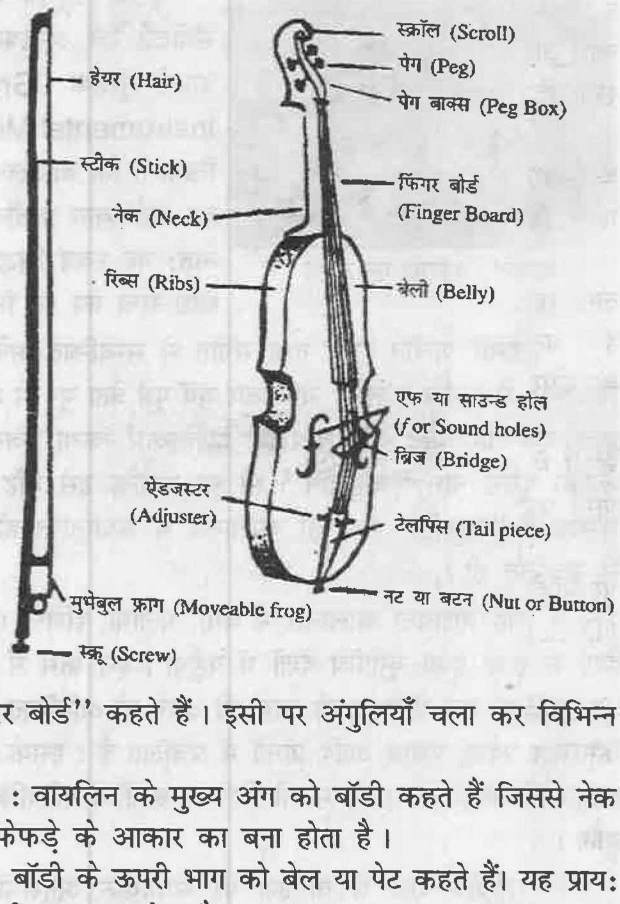

(3) पेग बॉक्स (Peg Box) : नेक के ऊपर तथा स्क्रॉल के नीचे के गड्ढेदार भाग को पेग बॉक्स कहते है, जिसके छिद्रों में चार खूँटियाँ लगी होती है, इसी में तार फँसाकर समेटे जाते है।

(4) पेग (Peg) : पेग खूँटियों को कहते हैं। चार खूँटियाँ पेग बॉक्स में लगी रहती है, जिनके अन्दर चार तार फँसाए जाते हैं।

(5) फिंगर बोर्ड (Finger Board) : नेक के लम्बे भाग के ऊपर काली लकड़ी या एबोनाइट की एक पटरी सटी रहती है जिसे ''फिंगर बोर्ड'' कहते हैं। इसी पर अंगुलियाँ चला कर विभिन्न स्वरों की उत्पति की जाती है।

(6) बॉडी (Body) : वायलिन के मुख्य अंग को बॉडी कहते हैं जिससे नेक सटा हुआ होता है। यह बॉडी फेफड़े के आकार का बना होता है।

(7) बेल (Belly) : बॉडी के ऊपरी भाग को बेल या पेट कहते हैं। यह प्राय: उत्तम कोटि के देवदार की लकड़ी का बना होता है।

(8) बैक (Back) : बॉडी के पिछले भाग को बैक (Back) या पीठ कहा जाता है। यह भाग बूक या तन्न की सुदृढ़ लकड़ी का बना होता है।

(9) रिब्स (Ribs) : बॉडी के चारों ओर लगे किनारे की पट्टियों को ''रिब्स'' या पसली कहते हैं, जो बेली, बैक तथा नेक को एकीकृत करता है।

(10) साउंड होल्स (Sound Holes) : बेली के ऊपर दाहिने ओर तथा बायीं ओर लम्बा सा 'F' आकार का छिद्र होता है, जिसे साउंड होल्स कहते हैं; जिसके अन्दर से वायलिन की सुमधुर आवाज गूंजती हुई निकलती है।

(11) ब्रिज (Bridge) : साउंड होल्स के बीचों-बीच बेली के ऊपर लकड़ी या हाथी दाँत का पुलिया के आकार का एक टुकड़ा लगा रहता है, जिसे ब्रिज कहते हैं। इसके ऊपर से तार पेग बॉक्स में जाता है।

(12) टेल पीस (Tail Piece) : ब्रिज से कुछ नीचे काली लकड़ी या सिंग का एक लम्बा सा टुकड़ा होता है, जिसे टेल-पीस कहते हैं। इसमें चार छिद्र होते हैं जिनमें चारों तार के निचले भाग की घुँडियाँ फँसायी जाती है अथवा इन चारों छिद्रों में ऐडजस्टर लगा दिए जाते हैं।

(13) ऐड जस्टर (Adjuster) : टेलपीस के चारों छिद्रों में लोहे या पीतल के कम-बेश होने वाले पेंच लगे होते हैं, जिन्हे "ऐडजस्टर" कहते हैं। इन्हीं में चार तारों को फँसा दिया जाता है, जो स्वरों को बारीक मिलाने के काम में आता है।

(14) बटन (Button) : बॉडी के सबसे नीचे रिब्स के बीचों-बीच एक कील लगी रहती है, जिसे बटन कहते हैं। टेल-पीस एक तार या ताँत के सहारे अंतिम छोर पर इसी बटन से लटका रहता है तथा उसका दूसरा एवं ऊपरी छोर चार तारों के सहारे ब्रिज के ऊपर टंगा रहता है।

(15) साउंड पोस्ट (Sound Post) : बॉडी के अन्दर दाहिने साउंड होल के बगल में एक पतली लकड़ी खड़ी रहती है जो बेली और बैक को मिलाती है। उसे साउंड पोस्ट कहते हैं। यह दाहिने भाग के दो तारों (E.A.) को गूँज एवं माधुर्य प्रदान करता है।

(16) स्पाईन : बॉडी के बायें साउंड होल के सटे अन्दर में एक लम्बी लकड़ी पूरे बॉडी के लम्बाई में सटी रहती हैं जिसे "स्पाइन" कहते हैं। यह बायीं और स्थित तारों (D.G.) को गूंज एवं माधुर्य प्रदान करता है।

(17) बो या गज : पूर्व में यह नींबू की लचीली और मजबूत लकड़ी की धनुष के आकार की निर्मित होती थी। इस पर नारियल के रेशे चढ़े होते थे, इसलिए इसे 'बो' की संज्ञा दी गई है। परन्तु आजकल इसका रूपान्तरण हो चुका है। इसका मुख्य भाग ढाई फीट लंबी मजबूत तथा लचीली लकड़ी का बना रहता है, जिसका एक छोर घूमा हुआ और गड्ढेदार रहता है। उस गड्ढे में 'हेयर' या 'बाल' को फँसाकर फील दे दी जाती है। इसके दूसरे सिरे पर चौकोर लकड़ी का खिसकने वाला एक छोटा सा टुकड़ा लगा है। जिसे "मूबेबल फ्रॉग" या नट कहते हैं। इस मूबेबल फ्रॉग में हेयर या बाल का दूसरा सिरा स्थापित रहता है। स्क्रू या नट को घुमाकर आवश्यकतानुसार वादक बो के हेयर या बाल को कड़ा या ढीला करते है।

सितार

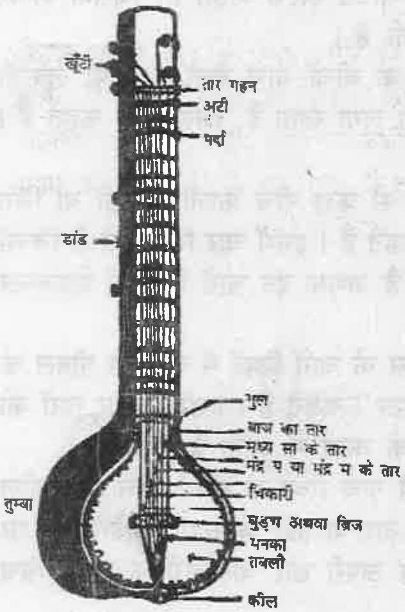

भारतीय वाद्य यन्त्रों में वर्तमान में सितार एक महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय स्थान रखता है, जिसे विश्व ख्याति भी प्राप्त हो चुकी हैं।

मध्यकालीन एवं वर्तमान शास्त्रों के अध्ययन से यह पता चलता है कि प्राचीन काल से भारत में तीन तारों की वीणा जिसे 'त्रीतन्त्री वीणा'' कहा जाता था, का सर्वाधिक प्रचलन था। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि कालान्तर में उसका ही रूपान्तरण सितार के रूप में हुआ। कुछ आधुनिक ग्रन्थकारों का मत है कि 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी गायक अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया। चूँकि पहले इसमें केवल तीन तार लगे रहते थे तथा फारसी में तीन को 'सेह' कहा जाता है इसलिए तीन तार वाले इस वाद्य को 'सेहतार' का नाम दिया गया। यह नाम बाद में बदलकर 'सितार हो गया। परन्तु किसी वस्तु या वाद्य-यन्त्र का हल्का रूपान्तरण या नाम बदलने से उसको नया आविष्कार मानना युक्तिसंगत नहीं लगता। आकार की दृष्टि से भी सितार वीणा का ही दूसरा रूप दीखता है। कालान्तर में सम्भवतः तानसेन के पुत्र मसीत खान ने इसमें 6 तार लगाने की परम्परा चलाई। अब उसमें तरब की भी अनेक तारें लगाकर उसका नाम 'सुर बहार' रख दिया गया।

'सितार' पर चढ़े सात तारों में क्रमशः प्रथम में प्रधान तार को **'बोल'** या **'बाज'** का तार कहते हैं। दूसरे और तीसरे तारों को **'जोड़ी'** का तार कहते हैं। चौथे तार को **'पंचम'** का तार, पाँचवे को **'लरज'** का तार तथा छठे और सातवें को **'चिकारी'** का तार कहते हैं।

तारों को मिलाने के क्रम में प्रथम तार को 'मध्यम' में दूसरे और तीसरे जोड़ी के तारों को 'मध्य षड्ज' में, चौथे तार को मन्द्र पंचम, पाँचवें को अति मन्द्र पंचम, छठे को 'मध्य षड्ज' तथा सातवें को 'तार षड्ज' के स्वरों में मिलाया जाता है। इस प्रकार क्रमानुसार सात तारों को म़ सा सा प़ प़ एवं सां सां में मिलाया जाता है।

सितार के अंग

1. तुम्बा : सूखे हुए गोल कद्दू अथवा लौकी का छोटी हाँडी जैसा गोलाकार भाग तुम्बा कहलाता है।

2. तबली : तुम्बे के ऊपर एक पतली लकड़ी का ढक्कन-सा होता है, जिस पर धुरच या ब्रिज स्थापित रहता है, उसे तबली कहते हैं।

3. धुरच या ब्रिज : तबली के ऊपर हिरण के सींग, हाथी के दाँत अथवा हड्डी का एक पुल के आकार का टुकड़ा लगा रहता है, जिसे 'धुरच' या 'ब्रिज' कहते हैं। ब्रिज का लगा रहता है, जिसे 'धुरच' या 'ब्रिज' कहते हैं। ब्रिज का अर्थ ही है-पुल या पुलिया। इसी ब्रिज से होकर सातों तार लंगोट या कील में जाते हैं तथा इसे ही घिसकर और साफ कर तारों में झंकार पैदा करने के लिए जवारी खोली जाती है।

4. लंगोट : सितार के तुम्बे के निचले भाग पर तारों को बाँधने के लिए एक लकड़ी की पट्टी लगी रहती है जिसमें छिद्र रहते हैं, उसे लंगोट कहते हैं। किसी-किसी सितार में लंगोट के स्थान पर एक 'कील' लगी रहती है जिसमें सभी तार फँसाये जाते हैं।

5. डाँड : सितार के तुम्बा के ऊपर लकड़ी का एक लम्बा और खोखला भाग लगा रहता है उसे 'डॉड' कहा जाता है। इसी पर पीतल अथवा लोहे के 'परदे' अथवा 'सुन्दरी' लगे रहते हैं। डॉड के ऊपर भाग में खूँटियाँ लगी रहती हैं।

6. सुन्दरी या परदे : डाँड के ऊपर पीतल या लोहे के परदे ताँत या धागे से बँधे रहते हैं जिन्हें 'सुन्दरी' या कट भी कहा जाता है। इनकी संख्या 16 से 19 तक रहती है जिनपर ऊँगलियों को क्रमश: दबाकर मिजरान से तारों पर आघात करने से विभिन्न स्वरों की उत्पत्ति की जाती है।

7. गुल या गुलू : तुम्बा और डाँड को मिलान वाले स्थान को 'गुल' या गुलू कहते हैं।

8. अटी और तार गहन : सितार के सबसे ऊपरी भाग में खूँटियों के नीचे हड्डियों की दो पहियाँ लगी होती हैं, जिस पर तार स्थित रहता है। इनमें से एक पर सभी तार रखे रहते हैं जिसे 'अटी' कहते हैं तथा उसके ऊपर की दूसरी पही में छिद्र होते हैं। इन्हीं छिद्रों से होकर सभी तार खूँटियों तक जाते हैं। इस दूसरी पट्टी का नाम 'तार गहन' अथवा 'तार दान' है।

9. खूँटियाँ : तार के ऊपर तथा डाँट के बगल में लकड़ी की सात खूँटियाँ लगी रहती हैं जिसमें सात तार विशेष रहते हैं जिसके तारों को मिलाकर स्वर की स्थापना की जाती है।

10. मनका : सितार के घुड़च के नीचे एक अटी और तार गहन के ऊपर कुछ तारों में मोती लगे रहते हैं जिससे स्वर को कम और ज्यादा करने में सहायता मिलती है।

गिटार

गिटार एक पाश्चात्य वाद्य यन्त्र है। यह सर्वप्रथम दक्षिणी यूरोप के भूमध्यसागर तट पर "किथारा" (Kithara) के नाम से तार यन्त्र के रूप में विकसित हुआ। बाद में यह रूपान्तरित होकर "सीदर" (Cither), सिस्टर (Cistre, Cister) या "सिटोल" (Citole) के नामों से कालान्तर में परिवर्द्धित हुआ। तत्पश्चात इसका पुन: रूपान्तरण "सीटर्न" (Cittern) नाम से समस्त यूरोपीय देशों में विख्यात और लोकप्रिय हुआ।

सीटर्न की बॉडी (Body) मेन्डोलिन की तरह गोलाकार, पोला तथा आज के गिटार की तरह चिपटी बनायी गयी; जिसके पेग बाक्स (Peg box) को खोद कर सुन्दर नक्कासी की जाती थी। साथ ही बॉडी (Body) में भी सुन्दर नक्कासी होती थी जिससे यह महंगा साज समझा जाता था। कहा जाता है कि सन् 1571 ई० में यह वाद्ययन्त्र टाइरॉल (Tyrol) के आर्कड्यूक फरडीनान्ड (Archduke Ferdinand) के लिए बनाया गया।

मेन्डोलिन (Mendoline) के जैसा सिटर्न में भी सभी तार जोड़ी के हिसाब से लगाये जाते थे जिसकी संख्या के लिए कोई नियम नहीं था अर्थात चार से चौदह तारों तक लगाने की परम्परा थी। अठारहवीं सदी में यह इतना लोकप्रिय हुआ कि सारंगी, इसराज, वायलिन आदि की तरह यह गायन की संगति के लिए अत्यधिक व्यवहार में लाया जाने लगा।

कालान्तर में सीर्टन ही इंगलैण्ड (England) में रूपान्तरित होकर गिटार (Guitar) का रूप धारण कर लिया। इसी प्रकार (Spain) में भी सीटर्न परिवर्द्धित होकर "मूरिस गिटार" (Moorish Guitar) के नाम से आविष्कृत हुआ, जो बाद में अनेक रूपान्तरण के पश्चात इसमें केवल छ: (6) तार लगाए गए।

इसी प्रकार स्पैनिस गिटार से मिलता जुलता ऑल्टो गिटार (Alto Guitar) नामक एक वाद्ययन्त्र भी विकसित हुआ।

(1) बॉडी या बेली : यह सबसे बड़ा लम्बा-चौड़ा नीचे का भाग है। यह अंदर से पोला होता है, जिसमें आवाज गूँजती रहती है।

(2) फिंगर-बोर्ड : यह भाग बॉडी के ऊपर एक चपटे डंडे की भाँति होता है। इसमे पर्दे (Frests) लगे रहते है, जिसपर अंगुलियाँ रखकर स्वर उत्पन्न किये जाते हैं।

(3) हैट : यह सबसे ऊपर का भाग है, जो चौकोर होता है। इसमे छह खूँटियाँ लगी रहती है, जिनको घुमाकर तार कसे जाते हैं। बॉडी के बीच में एक ब्रीज या घुरच होती है, जिसके ऊपर होकर तार गुजरते हैं।

बॉडी के बीच में ब्रीज से ऊपर एक गोल 'साउंडहोल' (छेद) होता है, जिनसे आवाज गूँजकर बाहर आती है। गिटार बजाने के लिए दायें हाथ के अँगूठे मे स्टील या

सैलोलाइड की बनी हुई रिंग पहनते हैं, जिन्हे प्रिक्स कहते हैं। हवाइमन गिटार के लिए बायें हाथ में स्टील की प्लेट (चपटी या गोल) रखते हैं, उसे 'बार' कहते है।

स्पैनिश गिटार में 'हैट' और फिंगर-बोर्ड के जोड़ पर एक स्टील की आधी गोल प्लेट लगाकर हवाइयन गिटार बना लेते हैं। जिसे रेज्डनट कहते है।

गिटार

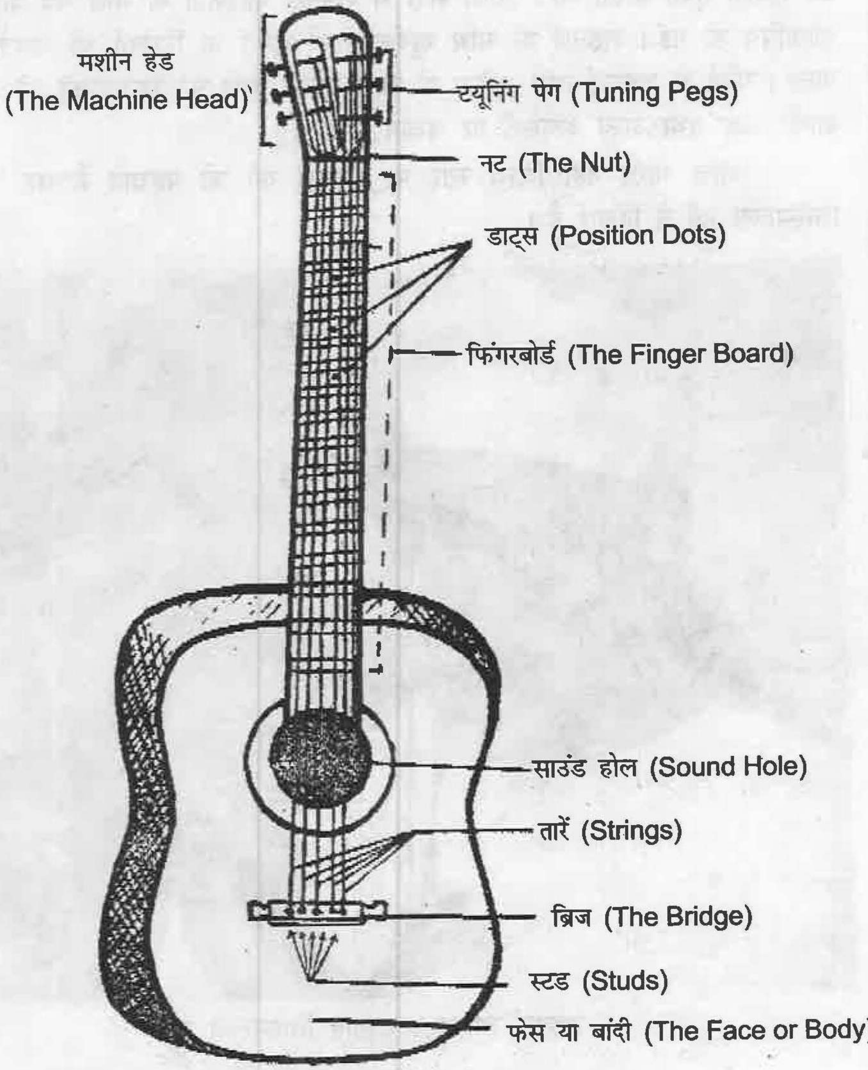

शहनाई

नफीरी (ओबो) जैसा दोहरी नली युक्त मुँह से फूंक कर बजाया जाने वाला उत्तर भारत का यह लोकप्रिय वाद्य यंत्र है। शहनाई लकड़ी से बनी होती है, इसमें छः से आठ छेद होते हैं। वादक द्वारा इसमें फूँके जाने से ध्वनि उत्पन्न होती है। दक्षिण भारत में नादस्वरम की तरह शहनाई को मंगल वाद्य, अर्थात शुभ अवसरों पर बजाया जानेवाला वाद्य माना जाता है, पहले यह कुलीनों के दरबारों में नौवत (नौ वाद्य यंत्रों का परंपरागत समूह) का हिस्सा हुआ करता था। 20वीं सदी में शहनाई महफिल के वाद्य यंत्र के रूप में भी लोकप्रिय हो गई। शहनाई के साथ खुर्दक जिसे डुग्गी या टिमकी भी कहते है, बजाया जाता। गाँवों में शहनाई तथा खुदैक के साथ बजाने वाले को रसनचौकी भी कहते हैं जो शादी व्याह तथा अन्य अवसरों पर बजाये जाते हैं।

आज भारत नही विश्व स्तर पर शहनाई की जो पहचान है वह 'भारत रत्न' विस्मिल्ला खाँ ने दिलाई है।

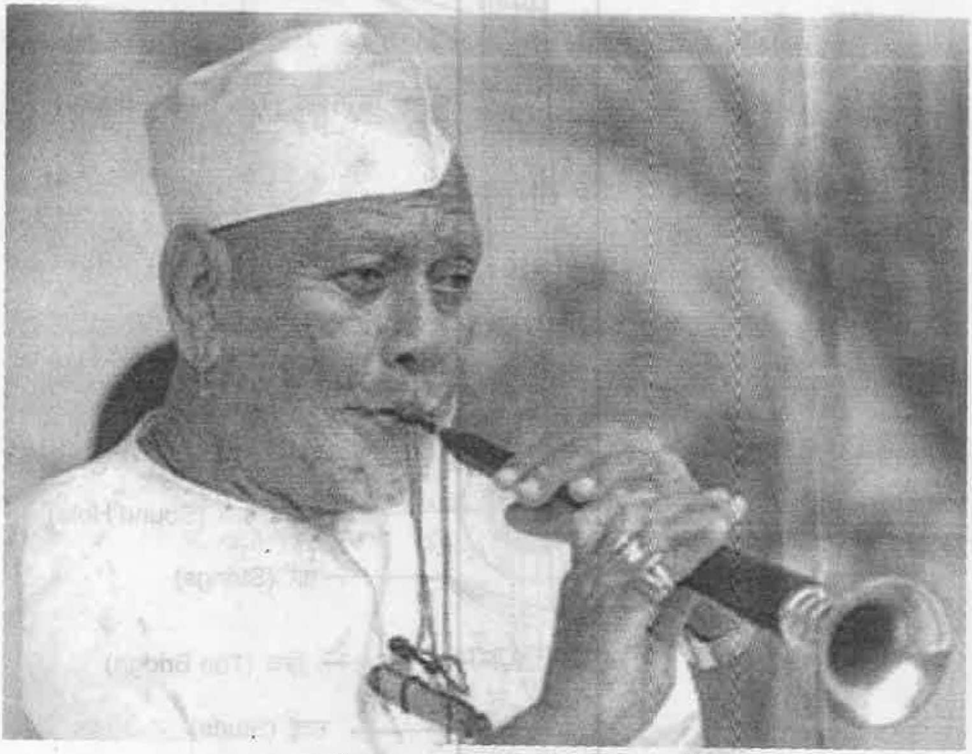

शहनाई वादक : उस्ताद विस्मिल्ला खाँ

सारंगी

उत्तर भारतीय हिन्दुस्तानी संगीत का लोकप्रिय वाद्य है। यह लगभग सभताकार, चाँडी बीच में थोड़ी पतली, पदा (सारिका) विहीन और आम तौर पर लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनी होती हैं। इसमें तीन लय तांत कभी-कभी चौथा धातु का तार तथा अक्सर 11 से 15 अनुवादी धातु पर भी होते हैं। सारंगी का लोक संगीत में व्यापक रूप से प्रयुक्त एक भिन्न स्वरूप सारिंदा है जिसे कभी-कभी भूल से सारंगी कह दिया जाता है। यह खोखली लकड़ी का गहरा, बिना पर्दो वाला और नीचे की ओर चमड़े से मढ़ा वाद्य है। ऊपरी अर्द्धांश खुला है। इसके पार्श्व नीचे मुड़े नुकीले कंटक बनाते है। पहले इसको पेरोवर नाचने वाली द्वारा अपनी सभाओं में प्रयुक्त किया जाता था। आज के समय में सारंगी शास्त्रीय संगीत में नृत्य के लिए प्रमुख रूप से शामिल हो गयी।

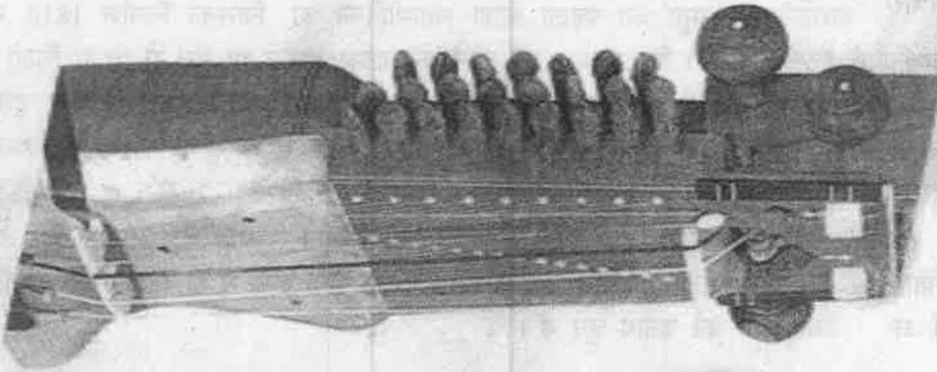

सारंगी

सारंगी वादक : पं० राम नारायण

हारमोनियम

हारमोनियम - यह पेटी या रीड आर्गन भी कहलाता है। मुक्त पत्ती वाला यह कुंजी-फलक वाद्य हाथ या पैर से संचालित छौंकनी के द्वारा दबाब-समकारी वायु भंडार से हवा फेंकता है जो धातु के खाँचों में कसी गई धातु पत्तियों को कंपन देती है और वाद्य बजता है। इसमें कोई नलिका नहीं होती है, स्वर पत्ती के आकार पर निर्भर करता है पत्तियों के अलग-अलग समूह भिन्न सुर देते हैं, ध्वनि की गुणवत्ता समूह की प्रत्येक पत्ती के चारों ओर वाले सुर कक्ष के विंशिष्ट आकार एवं तीक्ष्ण सुर निकालते हैं। सुर की प्रबलता घुटने से संचालित वायु कपाट या सीधे छौंकनी, पैडल को रोककर नियंत्रित की जाती है, हथ आधार के बाहर से गुजरे। 1930 में इलेक्ट्रीक वाद्य के आने के बाद इसका थोड़ा महत्त्व कम हुआ है परन्त आज भी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत में हारमोनियम को अनिवार्य माना गया है।

हारमोनियम समूह का पहला बाजा सहार्मोनिका था, जिसका निर्माण 1818 में विभना में एंटन हिक्ल ने किया था। इसे चीन के माउथ आर्गन या रोग से प्रेरणा मिली। 1970 के दशक में इसे रूस लाया गया था, 1840 में पेरिस में अलेक्जांद्र दिबेन द्वारा निर्मित हारमोनियम से पहले अस्तित्व में था। 1850 के बाद मुख्य सुधार पेरिस में विक्टर मस्तेल तथा अमेरिका में जैकब एस्टे ने किया।

आज जो सामान्यत: उपलब्ध हारमोनियम है वह तीन से साढ़े तीन सप्तक तक का होता है। जिसका प्रयोग लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत दोनों रूपों में हो रहा है और संगीत में अप विशिष्टता को बनाये हुए हैं।

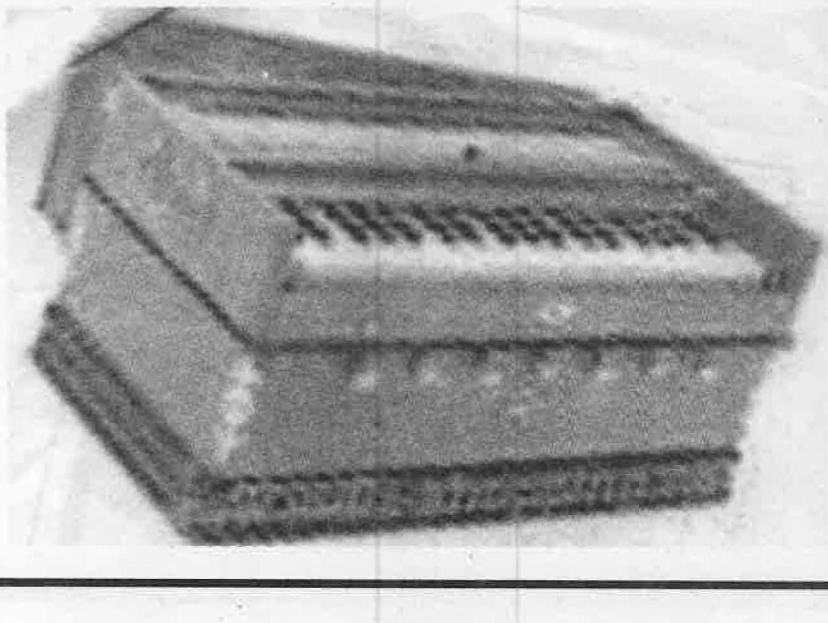

पाठ : हमारे वाद्य एवं उनके प्रकार

प्रश्न 1 : संगीत रत्नाकार के अनुसार कितने भाग में वाद्यों को बाँटा गया है।

प्रश्न 2 : अपनी पाठ्य पुस्तक से किसी दो वाद्यों का वर्णन करें।

प्रश्न 3 : अपने किसी एक वाद्य का फोटो बनाकर उसके बारे में विस्तृत वर्णन करें।

प्रश्न 4 : मिलान करें।

(i) पं० हरि प्रसाद चौरसिया	(i) शहनाई
(ii) पं० राम नारायण	(ii) बाँसुरी
(iii) पं० शिवकुमार शर्मा	(iii) सारंगी
(iv) पं० रवि शंकर	(iv) सितार
(v) उस्ताद विस्मिल्ला खाँ	(vi) सरोद
(vii) पं० विश्व मोहन भट्ट	(vii) गिटार

प्रश्न 5 : रिक्त स्थानों को भरें :

(i) एम राजन.....................बजाती हैं।

(ii) पं० राम नारायण...............बजाते हैं।

(iii) उस्ताद जाकिर हुसैन...............बजाते हैं।

(iv) उस्ताद अमजद अली खाँ..............बजाते हैं।

(v) भारत रत्न बिस्मिल्ला खाँ.............बजाते हैं।